'डॉ. निशंक का रचना संसार' अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में महामहिम राज्यपाल महोदय का सम्बोधन

(01 मई 2023)

जय हिन्द !

1. मंच पर विराजमान जूनापीठाधीश्वर परम पूज्य **स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी**, परमपूज्य **स्वामी चिदानन्द मुनी जी**, **डा. रमेश पोखरियाल निशंक जी**!

2. **'निशंक जी का रचना संसार'** विषय पर आयोजित इस **'अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'** में प्रदेश और देश–विदेश से पधारे सभी साहित्यकार महानुभावों का देवभूमि में **हार्दिक स्वागत करता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ।**

3. आप सब तो जानते ही हैं कि यह देवभूमि है, **ऋषि–मुनियों** की भूमि है, साधु–संतो की भूमि है। चारों धामों और असंख्य तीर्थों की भूमि है।

4. यह वीर भूमि है। यह सैन्य भूमि है। यह प्रकृति भूमि है, यह **संस्कृति भूमि** है। यह **गंगा यमुना सरस्वती** की भूमि है। **ज्ञान और उपासना** की भूमि है। तप और साधना की भूमि है।

5. **श्री गुरू गोविन्द सिंह** की तपस्थली है। हेम कुंड, अमृत सरोवर की भूमि है। **श्री गुरूनानक देव** जी की यात्रा की भूमि है।

6. चारों वेदों और अठ्ठारह पुराणों की रचना इसी भूमि पर हुई है, यहां विश्व के **सबसे बड़े महाकाव्य महाभारत** की भी रचना हुई है, **महाकवि कालिदास** की जन्मभूमि भी उत्तराखण्ड की यही भूमि है।

7. ऐसा लगता है कि आज एक बार फिर से **उत्तराखण्ड की वही महान परम्परा** फिर से दिखाई दे रही है, **अवधेशानन्द गिरि जी में, स्वामी चिदानन्द 'मुनि' जी** में उन्हीं ऋषि – मुनियों के पवित्र दर्शन होते हैं।

8. कालिदास की इस महान साहित्य परम्परा में हमें **डा. निशंक जी के साहित्य** रचना संसार का प्रतिविम्ब दिखाई देता है।

9. उत्तराखण्ड की इस पवित्र धरती पर आप निशंक जी के **साहित्य संसार की समीक्षा** कर रहे हैं, यह बहुत की अच्छी पहल है।

10. हमारी परम्परा कहती है– **'वादे वादे जायते तत्वबोधः!** अर्थात **संवाद से तत्व ज्ञान प्राप्त होता है।**

11. हमारी परम्परा में **शब्द को ब्रह्म कहा गया है,** यह महत्वपूर्ण नहीं है कि कितना लिखा है, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि क्या लिखा है।

12. वेदों में अनन्त ज्ञान है, वेदों की अनन्त शाखाएं हैं, फिर भी **वेद के एक अक्षर में ही अनन्त शक्ति समायी हुई है,**

13. **ऊं** का वह अक्षर, उस एक ही अक्षर की शक्ति को वाहे गुरू श्री गुरूनानक देव जी नें मनन किया, उस अक्षर की शक्ति को पहचाना और हमें बताया –

    इक ओंकार,
    सतनाम करता पुरख
    निर्मोह निर्वैर अकाल मूरत
    अजूनी सेभम्, गुरु परसादि।
    आदि सचु जुगादि सच
    है भी सच नानक होसे भी सच।।

14. हमारे गुरुओं नें, ऋषियों–मुनियों नें हमें साहित्य दिया है, ज्ञान दिया है। इस लिए साहित्य का हर एक शब्द कब शक्तिशाली बन जाए, इसका कोई पता नहीं है।

15. **'सत्यमेव जयते'** उपनिषद् का एक ही छोटा सा वाक्य है, देखिए आज **भारत के लिए** इसके क्या मायने हैं। **सत्य की विजय का यह सिद्धान्त हमारे ऋषियों में बहुत ही छोटे वाक्य में लिखा है।**

16. ऋषियों ने बहुत ही छोटे–छोटे शब्दों में कहा है – **मातृदेवो भव**, ये कहा कि **पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव**, **अतिथिदेवो भव!** आज ये छोटे–छोटे वाक्य **भारत की संस्कृति की गहराई** और **महानता** को प्रकट कर रहे हैं।

17. ये हमारी सोच के गहरे विन्दु हैं, हमारे साहित्य की शक्ति को बता रहे हैं, साहित्य की यह सम्पदा एक अलौकिक आनन्द और अलौकिक चेतना देने वाली निधि है।

18. मुझे बहुत खुशी है कि आज साहित्य के इस संगम में मुझे आप सबके बीच आने का मौका मिला, सच कहूँ तो मुझे आप सबके बीच आकर ज्ञान की एक परम्परा से जुड़ने जैसा अनुभव हो रहा है।

19. 'मुनि' जी के इस परमार्थ निकेतन में तो हमेशा ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म, कला और साहित्य विद्या का प्रवाह

होता रहता है, आज निशंक जी की रचनाओं पर विचार विमर्श एक अलग और एक विशिष्ट कार्य है।

20. मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि इस सम्मेलन में डॉ. **रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के पूरे साहित्य का मूल्यांकन भी किया जा रहा है।**

21. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी एक राजनीतिज्ञ तो हैं ही, वे लेखन के क्षेत्र में भी सक्रिय हैं, और प्रसिद्ध भी हैं।

22. **एक सच्चे राजनीतिज्ञ की यह पहचान है कि वह सदैव चिन्तनशील रहे, विचारशील रहे और अपने अनुभवों को, अपनी उपस्थिति को बनाए रखें।** अपनी भावनाओं को, अपने विचारों को लोगों के साथ साझा करे ।

23. इस नजरिये से देखें तो डॉ. निशंक पूर्ण रूप से खरे उतरते हैं, **आपने साहित्य, समाज और राजनीति तीनों ही आयामों में सक्रिय भी हैं और सफल भी हैं।**

24. अब तब आपकी 108 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, और यह भी पता चला है कि आपकी हर एक पुस्तक पर केन्द्रित 108 रविवारों में वेबिनार हुए और इन

वेबिनारों में इन पुस्तकों पर चर्चा हुई इन पर समीक्षा हुई ।

25. इस वेबिनार को साहित्य जगत के विद्वानों ने सराहा, और यह बहुत की बड़ी बात है कि '**वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस**' लंदन ने **'विश्व कीर्तिमान'** में दर्ज किया है।

26. **मैं आपको इस रिकार्ड को बनाने के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।** आपके कार्य उस स्तर के हैं जिसे सराहना मिलनी ही चाहिए।

27. मैं तो सदैव शिव जी के **त्रिशूल की पवित्र शक्ति** को जानता हूँ, निशंक जी के व्यक्तित्व में भी तीन आयाम हैं– **साहित्य, समाज और राष्ट्र।** आप **साहित्य के लिए** भी समर्पित हैं, **समाज के लिए** भी समर्पित हैं और **राष्ट्र के लिए भी** समर्पित हैं।

28. **किसी राष्ट्र के प्राण उसके साहित्य में ही छिपे होते हैं।** जिस प्रकार निर्जीव शरीर का कोई मूल्य नहीं होता, ठीक उसी प्रकार साहित्य के बिना राष्ट्र का कोई मूल्य नहीं हो सकता है।

29. हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे महान राष्ट्र ने दुनिया को **सबसे प्राचीन, सबसे महान, सबसे विशाल, सबसे अद्भुत साहित्य दिया है।**

30. हमारा साहित्य प्राचीन भी है, समृद्ध भी है और गतिशील भी, राष्ट्र की राष्ट्रीयता को निशंक जी जैसे साहित्यकार आप जैसे पारखी विद्वांन आगे बढ़ा रहे हैं, हमारे साहित्य को गतिशील बना रहे हैं।

31. साहित्य के माध्यम से देश की चेतना को एक आयाम दे रहे हैं। **हमारे युवा संकल्पों में स्फूर्ति जागृत कर रहे हैं।**

32. **आप सभी साहित्य रचना** के माध्यम से देश और राष्ट्र का ही निर्माण कर रहे हैं, आप भारत को एक महान आत्म–गौरव दिला रहे हैं, भारत की गरिमा बढ़ा रहे हैं, **एक सच्चे साहित्यकार का यही कर्तव्य है, यही धर्म होना चाहिए।**

33. **विश्वगुरु भारत, आत्म निर्भर भारत**, विकसित भारत के संकल्प को पूर्ण करने में **साहित्यकारों का महान योगदान** रहने वाला है।

34. भारतवर्ष की उन्नति, गौरव, गरिमा, हमारे समृद्ध साहित्य पर ही निर्भर है।

35. आप सभी नें मुझे धैर्य से सुना, इस अवसर पर मुझे बुलाया, **मैं डा. निशंक जी और उनकी पूरी टीम को बधाई देता हूँ।**

36. विशेष रूप से मेरे साथ मंच साझा कर रहे पूर्वांचल विश्वविद्यालय की कुलपति **प्रो0 निर्मला मौर्य जी,** महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. रजनीश शुक्ल जी,** नीदरलैंड से पहुंचीं, साहित्यकार **श्रीमती अश्वनी के गांवकर जी,** लंदन से पधारी प्रवासी साहित्यकार **डा. रश्मि खुराना जी,** इस कार्यक्रम के संरक्षक **प्रो योगेन्द्र नाथ 'अरूण'** जी आप सभी को मैं हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

37. देश–विदेश से पधारे सभी साहित्यकारों को, और आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

आप सभी को शुभकामनाएं!
आभार!

जय हिन्द!